



# मानव और प्रकृति संबंधित समस्या और उसका निवारण

**PUJABEN BHARATBHAI CHAUHAN**

**PhD Scholar**

**Shri Govind Guru University**

मानव और प्रकृति अन्योन्याश्रित है। प्रकृति का महत्व हमारे जीवन में अत्यधिक है। यह हमें शुद्ध और स्वस्थ वातावरण देता है, जो हमारे शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। मनुष्य कितना भी परेशान हो, पर जब वह प्रकृति के सानिध्य में आता है तो उसे शांति और एक नई उर्जा की अनुभूति होती है। जिससे वह अपनी सारी परेशानियाँ भूल जाता है। प्रकृति से ही मनुष्य सकात्मक ऊर्जा प्राप्त करता है, इसलिए वह छुट्टी के दिनों में प्राकृतिक वातावरण में घूमना पसंद करता है। वैसे प्रकृति पाँच तत्व से बनी हैं— अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, आकाश। यही पाँच तत्व से समग्र जीव सृष्टि का निर्माण हुआ है।

प्रकृति से प्राप्त जंगल, नदियाँ, महासागर, मिट्टी से हमें खाने को भोजन, फल-फूल, औषधि मिलती है। सांस लेने के लिए शुद्ध हवा मिलती है। पानी से खेतों की सिंचाई करके अनाज प्राप्त करता है। इस तरह मनुष्य प्रकृति की पूजा-अर्चना करते हुए अपना खुशहाल जीवन प्रकृति के साथ व्यतीत करता है। मनुष्य प्रकृति का सदुपयोग करता था, तब तक प्रकृति भी उसकी सहायक बनती थी।

आज के आधुनिक युग में औद्योगिकी के कारण मनुष्य प्रगति के रूप में भेंट प्राप्त कर सका है, पर आज की इस औद्योगिकी एक अभिशाप भी बनी हुई है। आज मनुष्य भागदौड़ और पैसे की लालच के कारण प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है। गलत तरह से प्रकृति का उपयोग करने के कारण आज प्रकृति के कई भयानक रूप हमारे सामने आ रहे हैं। आज समग्र सृष्टि वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, जमीन प्रदूषण तथा पर्यावरणीय कई बदलाव का सामना कर रही है। जिसकी असर पर्यावरणीय कई जीव सृष्टि पर एवं मानवीय स्वास्थ्य पर हो रही है। हरियाली से भरे पेड़ों की बेजिजक कटाई के कारण गर्मी का तापमान 45° से ज्यादा बढ़ रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी एक रिपोर्ट के अनुसार आज दुनिया के 25% रोगों और विकारों की जड़ पर्यावरण की बर्बादी रही है। रिपोर्ट में वैज्ञानिकों ने प्रदूषण और वनों की अंधाधुंध कटाई जैसी पर्यावरणीय चोटों का जन स्वास्थ्य की दृष्टि से विश्लेषण किया है।<sup>५</sup>

‘पृथ्वी हर एक की आवश्यकता के लिए पर्याप्त प्रदान करती है,

उनके लाभ लिए नहीं।’<sup>५</sup>

गाँधीजी की यह बात सबको समझ ने की जरूर है। मनुष्य अपने निजी प्रलोभन को पूरा करने हेतु जैसे की विविध कंपनियाँ केमिकलयुक्त पानी का निकाल नदी, तालाब और समुद्र आदि में करता है, जिसके कारण कई जलीय प्राणी को तथा मनुष्य का उस पानी का उपयोग करने के कारण नुकसान हो रहा है व जल प्रदूषण भी बढ़ता है।

मनुष्य विविध प्रकार के कूड़ा व कचरे को जलाते है एवं अपनी सुविधा हेतु मिट्टी का तेल, पेट्रोल, डीजल का प्रयोग करता है, जिसके कारण जहरीले वायु हवा के साथ संपर्क में आते ही मनुष्य के सांस में जाकर नुकसान करता है और शुद्ध पर्यावरणीय वातावरण को दूषित करके वायु प्रदूषण फैलाते हैं।

मनुष्य अपनी सुविधा के लिए ए. सी, फ्रिज जैसे साधनों का अधिक मात्र में प्रयोग कर रहा है, जिसमें क्लोरोफ्लोरो कार्बन नामक अत्यंत जहरीली वायु का उपयोग होता है। जिसके कारण वातावरण में सूरज की पारबैंगनी किरणों से पृथ्वीवासी को रक्षण देने वाला वायु ओज़ोन के स्तर को नुकसान पहुँच रहा है। ओज़ोन के स्तर को नुकसान होने के कारण पर्यावरण का तापमान अधिक मात्रा में बढ़ रहा है। गर्मी के दिनों में अधिक गरम वातावरण रहता है। सर्दियों में भी गर्मी का एहसास रहता है। अनिश्चित समय में बारिश हो रही है।

ओज़ोन के स्तर को नुकसान होने के कारण ग्लोबल वॉर्मिंग की असर पूरी पृथ्वी पर हो रही है। वातावरण में भी बदलाव आ रहे हैं। सूरज के पारबैंगनी किरणों के कारण गर्मी बढ़ रही है, जिससे कई प्राणी सृष्टि लुप्त हो गई है और कई प्राणी सृष्टि नाश होने की कगार पर है। मनुष्य को भी त्वचा संबंधित समस्या, रक्तचाप की मात्र बढ़ाना आदि समस्या होने लगी है।

ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण बर्फाच्छादित हिमालय, ध्रुवीय प्रदेश के बर्फ की चादर और कई ग्लेशियर पिघल रहे हैं। जिससे समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। कई समुद्र के किनारे के शहर पानी में डूब जाने की नौबत आ रही है। मालदिव जैसे देश पानी में गरकाव हो गए हैं। भारत के कई ऐसे शहर पानी में डूब जाने की समस्या से घिरे हुए हैं। इतना ही नहीं अतिवृष्टि, चक्रवात, तूफान जैसी समस्या हा भी सामना करना पड़ रहा है।

यह समस्या को दूर करने के लिए मनुष्य को जागृत होना ही पड़ेगा वरना कई समस्या का सामना करना पड़ेगा।

### प्रकृति संबंधित समस्याओं का निवारण

- मानव अब सचेत हो गया है जिसके कारण विश्व भर में ऐसी स्वच्छ प्रौद्योगिकी की खोज आरंभ की जा चुकी है। जिनमें ऊर्जा का कम उपयोग होने के कारण पर्यावरण को कम नुकसान होगा।
- सभी देश को एक जुट होकर पर्यावरण की जागृति लाने का प्रयास करना चाहिए।
- प्लास्टिक का रिसाइकलिंग का कार्य अधिक मात्रा में होना चाहिए।
- अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाना चाहिए।
- जल, ऊर्जा और पेट्रोलिम पदार्थ का कम से कम प्रयोग करना चाहिए।
- घर या बिल्डिंग में हवा का प्रवाह ज्यादा हो वैसी जगह पर खिड़की रखनी चाहिए, जिससे कमरे में वायु की गति बढ़ती है।
- स्वचालित नल की व्यवस्था होनी चाहिए।
- व्यर्थ जल का पुनर्चरण होना चाहिए।
- पेड़-पौधों को निरंतर पानी देना चाहिए।
- वर्षा के जल का भू-गर्भीकरण करना चाहिए।
- कुदरती अप्राप्य ऊर्जा का कम प्रयोग करना चाहिए।
- कम फ़्लस वाले टॉयलेट का प्रयोग करना चाहिए जिससे कम पानी का उपयोग हो सके।
- सोलर प्लान्ट की व्यवस्था का अधिक प्रमाण बढ़ाना चाहिए, जिससे ऊर्जा का संग्रह कर सकते हैं।
- पवन चक्की का प्रयोग करके ऊर्जा की बचत करनी चाहिए।
- बायोमास गैस की पद्धति का प्रयोग करके ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं।
- हानिकारक रसायनों का प्रयोग नहीं करनी चाहिए।
- कूड़ा-कचरा जलाना नहीं चाहिए।
- क्लोरोफ्लोरो कार्बन का प्रयोग कम हो सके ऐसे साधन विकसित करना चाहिए।
- उपर्युक्त कार्य विश्वभर में हो रहा हैं पर उसकी मात्रा में बढ़ोतरी होनी चाहिए।

## संदर्भ

- 1 प्रकृति के बदलते रंग हरित पौद्योगिकी के संग - ले. डॉ. विनीता सिंघल (राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत -2017
- 2 \*प्रकृति के बदलते रंग हरित पौद्योगिकी के संग - ले. डॉ. विनीता सिंघल (राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत -2017 )पृ- 7
- 3 \*\* वही -पृ-9

